[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3633

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

''सांझी लोककला में : रंगो से आकर्षण'' (लोकसंस्कृति मंच इंदौर के विशेष संदर्भ में)

डॉ. श्रीमती मनोरमा चौहान
विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग
श्रीमती शीतल सोनी
(शोधार्थी चित्रकला)
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर, कन्या महाविद्यालय,किला भवन, इंदौर

लोककला दो शब्दों का मिश्रित रूप है (लोक+कला) लोककला। ''लोक'' शब्द का प्रयोग उस सम्पूर्ण जनसमुदाय के लिए किया जाता है जो साथ मिलकर कार्य को करते है तथा ''कला'' कल्पनाओं को आकार देने कि क्रिया को कहते है। अर्थात विशेष जनसमुदाय द्वारा उनकी कल्पना को आकार देने की पद्धती को लोककला कहा जाता है।

मालवांचल मध्यप्रदेश का हृदय स्थल है तथा इसमें विशेष इन्दौर शहर है यहां की जनता आज भी धर्मप्रेमी तथा अपनी संसकृति संजोए हुए है। यहाँ के अनुकूल प्राकृतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक वातावरण के साथ ही लोक संस्कृति लोक साहित्य, लोक संगीत, एवं लोककला भी समृद्ध है। इसमें एक लोककला है ''संजा''। इस लोककला पर्व को कुँवारी लड़कीयाँ श्राद्ध पक्ष में हर वर्ष भादवा माह की पूर्णिमा से अश्विन माह की अमावस्या तक अच्छा वर पाने के लिए संजा पूजन एवं व्रत–उपवास के माध्यम से करती है। जिस प्रकार पार्वती जी ने भगवान शंकर को संजा वृत के द्वारा प्राप्त किया था।

संध्या देवी नमस्तुत्ये, शांतीदात्री सुख प्रदा
वर दात्री शिवप्रिया, वंशवृद्धि कराभवः।
संध्या शिवप्रिया माता, मंगला सर्व शांति दात्री
प्रतिं प्रयच्छ में देवी वरदात्री नमोसततु।।

अर्थात् – संध्या देवी को नमस्कार है वह शिवप्रिया है वह सुखशांति प्रदायनी है और वंश वृद्धि करने वाली है, वह माता है, वह शुभ है, सुख शांति और श्रेष्ठ पति देने वाली है। इस लोक कला पर्व का इंदौर में बड़ी ही श्रद्धा से मनाया जाता है। सांझी मालवा की लोकदेवी है अतः इसकी आराधना में आस्था और कला का मधुरम समावेश है। गोबर से भित्ति पर लिपकर उस पर लचकचे गोबर से विभिन्न आकृतियाँ बनाकर उस पर रंग–बिरंगे फुलों जैसे लाल, कत्थई, सफेद, गहरे गुलाबी, हल्के गुलाबी, केशरिया, हल्के पीले, गहरे पीले, नारंगी, जामुनी तथा हरि पत्तियों द्वारा तथा चमकीली पन्नीयों जैसे सुनहरी, चांदीसी, लाल–पीली, नीली, हरी, गुलाबी, केशरिया एवं और भी रंगों को लेकर उसे चिपकाकर उन आकृतियों को रंगबिरंगी बना दी जाती है भित्ती पर अंगुठे और तर्जनी से दबाकर चिपकाकर गोबर की जो आकृतियाँ उभारी जाती है वे समग्र रूप से भित्ति चित्र होकर भी भित्ति प्रतिमाएँ है और भित्ति प्रतिमाए होकर भी भित्ति चित्र है। इनमें, रंगो के संतुलन का सुव्यवस्थित संयोजन होता है। जैसे लोककला जगत में रंगों का संयोजन बहुत ही महत्व रखता है तथा यह प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक निरंतर चल रहा है। लोक कलाकारों के आंतरिक भावों की अभिप्रेरणा कला में रंगो के संयोजन के माध्यम से प्रदर्शित होती है। रंगों के तालमेल का अपना ही अलग महत्व रहा है हर तरह के रंगो की अपनी भाषा होती है तथा उसका कलाकार से गहरा संबंध होता है। सांझी के बनने के उपरान्त उसपर किया जाने वाला फूलों का श्रृंगार किसी दुल्हन से कम नहीं लगता। रंगों के सही संयोजन व तालमेल से ही सांझी आकर्षक लगती है चित्रकला में ''षडांग'' अर्थात् चित्रकला के छः अंगों में छठे स्थान पर ''वर्णिकाभंग'' अर्थात् रंगों का महत्व बताया गया है। इसके सही तालमेल से कलाकार की कला–कौशल का विकास व दर्शक को रंगों के महत्व का ज्ञान होता है। इससे कलाकार का रंगों तथा विचारों का सम्बन्ध स्पष्ट होता है। जैसे कलाकार के विचार होगें वैसे ही कल्पना में रंगों का संयोजन होगा। सांझीलोक कला में रंग–बिरंगे फूलों का महत्वपूर्ण योगदान है। इन्ही फूलों के रंगों तथा चमकीली पन्नीयों और रंगीन कागजों के द्वारा सांझी लोक कलाकार से लेकर आधुनिक नव युवतियाँ भी रंगों के संयोजन को भली भांति सुसज्जित करती आई है।

मालवा के इन्दौर में आज भी संजा लोककला पर्व सोलह दिनों तक हर्षोउल्लास के साथ बनाया जाता है इसी की कड़ी में इन्दौर के ''लोक संस्कृति मंच'' के लोक कला उत्सव 16 वर्षो से सम्पन्न किया जा रहा है जो कि बहुत ही सराहनीय है। वर्ष 2014 में इस उत्सव कि प्रतिभागीयो की संख्या ने इंदौर का नाम गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज कराया। इंदौर अंचल जैसे – राऊ, बिजलपुर, रंगवासा, बिचौली मर्दाना, बिचौली हप्सी, अहीरखेड़ी, अरण्या, सिमरोल, चोरल, झलारियाँ, साँवेर, देपालपूर, मांचल आदि स्थानों पर आज भी संजा जिवंत है। इन समस्त स्थानों से कलाकार इंदौर आकर संजा लोककला उत्सव में अपनी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

प्रतिभागी देते है। तथा उभरांकन शैली तथा फूलों और चमकीली पन्नीयों द्वारा रंगों का संयोजन सरहानीय होता हैं इस उत्सव को सम्पन्न कराने में लोक संस्कृति मंच के बड़े समुह की जिम्मेदारी होती है जो सभी के द्वारा बड़ा ही श्रद्धा और लगन से निभायी जाती है। जो की लोक संस्कृति मंच इंदौर के अध्यक्ष श्रीमान शंकरललवानी जी के निर्देशन में होती है।

रंगों का संयोजन संजा में सोन्दर्य वृद्धि करके उसकी महत्वता तथा आकर्षण में वृद्धि लाता है। इनमें रंगों का चयन कलाकार द्वारा स्वयं किया जाता है इन रंगों का अपना प्रतिकात्मक अर्थ होता है। तथा इनके पारस्परिक संबंध तथा रंगतों में विभिन्नता से कला में सौन्दर्य का सृजन होता है। लोक कलाकारों के मन को और सांस्कृतिक मूल्यों को समझने के लिए लोककलाओं के इतिहास और स्वरूप को जानना जरूरी है। आधुनिक समाज के अपेक्षाकृत विकसित रूप की धारा का परम्परागत स्त्रोत लोक साहित्य और लोक कलाओं में ही है। सम्पूर्ण कला परम्पराएँ हमारी संस्कृति का दर्पण है। इनमें हमारे आचार–विचार, लोक जीवन का सुख–दुख अतित एवं वर्तमान सुरक्षित है। प्रकृति की भांति परिवर्तन के रंग ज्यों के त्यों स्पष्ट कर देना लोक कला की सहजता है।

संदर्भ सूची

1. *डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहत – म.प्र. के मालवा जनपद की चित्रकला ''चितरावन'' – म.प्र. आदिवासी लोककला परिषद्, भोपाल 2008*
2. *डॉ. श्रीराम परिहार ''चौमासा अंक 44 मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद वर्ष 1997*
3. *श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य : सिद्धांत और प्रयोग*
4. *श्री रवीन्द्र भ्रमर, हिन्दी भक्ति साहित्य में लोकत्व*
5. *प्रकाश कड़ोतिया – चौमासा अंक 92 वर्ष 2013*
6. *डॉ. शिवकुमार मधुर – ''संजा'' मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद 1985*
7. *डॉ. रीता प्रताप – भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास*
8. *अग्रवाल गिरिजा किशोर – कला समीक्षा*
9. *वाचस्पति गैरोला – भारतीय चित्रकला 1963, मित्र प्रकाश प्रा.लिमिटेड इलाहाबाद*